खण्ड-198, अंक-8
शुक्रवार, 28 भाद्रपद, शक संवत् 1880
(19 सितम्बर, 1958 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 198 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश (भारत)
१९५८

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे।
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, १९ सितम्बर, १९५८

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री आत्माराम गोविन्द खेर की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—२६५

अक्षयवर्सिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अब्दुल लतीफ नोमानी, श्री
अब्दुस्समी, श्री
अमोलादेवी, श्रीमती
अयोध्याप्रसाद आर्य, श्री
अली जर्रार जाफरी, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधेशचन्द्रसिंह, श्री
अहमद बख्श, श्री
आत्माराम पांडेय, श्री
आर्थर सी० ग्राइस, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
उदयशंकर, श्री
उमाशंकर शुक्ल, श्री
उल्फ़तसिंह, श्री
एस० अहमद हसन, श्री
कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री
कमरुद्दीन, श्री
कमलकुमारी गोइंदी, कुमारी
कल्याणराय, श्री
कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री
कालीचरण अग्रवाल, श्री
काशीप्रसाद पांडेय, श्री
किशनसिंह, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
कृपाशंकर, श्री
केशव पांडेय, श्री
केशवराम, श्री
कैलाशकुमार सिंह, श्री
कैलाशनारायण गुप्त, श्री
कैलाशवती, श्रीमती
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
गंगाधर जाटव, श्री
गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा)
गंगाप्रसाद सिंह, श्री
गणेशप्रसाद पांडेय, श्री
गनेशचन्द्र काछी, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री
गिरधारीलाल, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गुरुप्रसादसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीकृष्ण आज़ाद, श्री
गौरीराम गुप्त, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चन्द्रहास मिश्र, श्री
चन्द्रावती, श्रीमती
चन्द्रिकाप्रसाद, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
छोटेलाल पालीवाल, श्री
जगदीशनारायण, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री
जगदीशशरण अग्रवाल, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ लहरी, श्री
जगपतिसिंह, श्री

जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जबगोपाल, डाक्टर
जयराम वर्मा, श्री
जवाहरलाल, श्री
जागेश्वर, श्री
जुगलकिशोर, आचार्य
जोखई, श्री
ज्वालाप्रसाद कुरील, श्री
डूंगरसिंह, श्री
ताराचन्द माहेश्वरी, श्री
तारादेवी, डाक्टर
तिरमलसिंह, श्री
तेजासिंह, श्री
दत्त, श्री एस० जी०
दाताराम चौधरी, श्री
दीनदयालु करुण, श्री
दीनदयालु शर्मा, श्री
दीनदयालु शास्त्री, श्री
दीपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री
देवदत्तसिंह, श्री
देवराम, श्री
द्वारिकाप्रसाद मित्तल, श्री (मुजफ्फरनगर)
द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री (गोरखपुर)
धनीराम, श्री
धनुषधारी पांडेय, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
नत्थूसिंह, श्री (बरेली)
नन्दकुमार देव वशिष्ठ, श्री
नरदेवसिंह दतियानवी, श्री
नरेन्द्र भंडारी, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नवलकिशोर, श्री
नागेश्वरप्रसाद, श्री
नारायणदास पासी, श्री
निरंजन सिंह, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
परमानन्द सिनहा, श्री
परमेश्वरदीन वर्मा, श्री
पहलवानसिंह चौधरी, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रभावती मिश्र, श्रीमती
प्रभुदयाल, श्री
फतेहसिंह राणा, श्री
बलदेवसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बसंतलाल, श्री
बादामसिंह, श्री
बाबूराम, श्री
बाबूलाल कुसुमेश, श्री
बिन्दुमती दास, श्रीमती
बिशम्बरसिंह, श्री
बुद्धीलाल, श्री
बुलाकीराम, श्री
बृजबासीलाल, श्री
बृजरानी मिश्र, श्रीमती
बेचनराम, श्री
बेचनराम गुप्त, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजूराम, श्री
ब्रजभूषणशरण, श्री
ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री
भगवतीप्रसाद दुबे, श्री
भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री
मंजूरुलनबी, श्री
मथुराप्रसाद पांडेय, श्री
मदनगोपाल वैद्य, श्री
मदनमोहन, श्री
मलखानसिंह, श्री
महमूदअली खां, कुंवर (मेरठ)
महमूद अली खां, श्री (रामपुर)
महमूद अली खां, श्री (सहारनपुर)
महमूद हुसैन खां, श्री
महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महीलाल, श्री
महेशसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
मान्धाता सिंह, श्री
मिहरबानसिंह, श्री
मुक्तिनाथ राय, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुबारक अली खां, श्री
मुरलीधर, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुहम्मद सुलेमान अधमी, श्री
मुहम्मद हुसैन, श्री
मोहनलाल, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री

मोहनसिंह मेहता, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
रघुनाथसहाय यादव, श्री
रघुवीरसिंह, श्री (मेरठ)
रणबहादुरसिंह, श्री
रमाकांतसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राजकिशोर राव, श्री
राजकुमार शर्मा, श्री
राजदेव उपाध्याय, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजबिहारी सिंह, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रदत्त, श्री
रामअधार तिवारी, श्री
रामकृष्ण जैसवार, श्री
रामकृष्ण सारस्वत, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजी सहाय, श्री
रामदास आर्य, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामप्रसाद, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामप्रसाद नौटियाल, श्री
राममूर्ति, श्री
रामरतनप्रसाद, श्री
रामरतीदेवी, श्रीमती
रामलक्षण तिवारी, श्री
रामलखन, श्री (वाराणसी)
रामलखन मिश्र, श्री
रामलखनसिंह, श्री (जौनपुर)
रामलाल, श्री
रामवचन यादव, श्री
रामसनेही भारतीय, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामहेत सिंह, श्री
रामेश्वरप्रसाद, श्री
लक्षमण दत्त भट्ट, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लक्ष्मणसिंह, श्री
लक्ष्मीरमण आचार्य, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री
लुत्फअली खां, श्री
लोकनाथसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
वासुदेव दीक्षित, श्री
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विशालसिंह, श्री
विश्वनाथसिंह गौतम, श्री
वीरसेन, श्री
व्रजगोपाल सक्सेना, श्री
व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुंतलादेवी, श्रीमती
शब्बीर हसन, श्री
शमसुल इस्लाम, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शिवप्रसाद, श्री (देवरिया)
शिवमंगल सिंह, श्री
शिवमूर्तिसिंह, श्री
शिवराजबलीसिंह, श्री
शिवराजसिंह यादव, श्री
शिवराम पांडेय, श्री
शिववचनराव, श्री
शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री
शीतलाप्रसाद, श्री
शोभनाथ, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामलाल यादव, श्री
श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी
श्रीकृष्ण गोयल, श्री
श्रीनाथ, श्री (आजमगढ़)
श्रीनाथ भार्गव, श्री (मथुरा)
श्रीनिवास, श्री
संग्रामसिंह, श्री
सईद अहमद अन्सारी, श्री
सज्जनदेवी महनोत, श्रीमती
सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती
सम्पूर्णानन्द, डाक्टर
सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती
सियादुलारी, श्रीमती
सीताराम, डाक्टर

सीताराम शुक्ल, श्री
सुक्खनलाल, श्री
सुखरानीदेवी, श्रीमती
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री
सुखीराम भारतीय, श्री
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दरलाल, श्री
सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री
सुरेशप्रकाशसिंह, श्री
सुल्तान आलम खां, श्री
सूरतचन्द रमोला, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीदुल्ला खां, श्री
हरकेशबहादुर, श्री
हरदयालसिंह पिपल, श्री
हरदेवसिंह, श्री
हरिदत्त काण्डपाल, श्री
हरिशचन्द्र सिंह, श्री
हरिहर बख्शसिंह, श्री
हरिशचन्द्र अष्ठाना, श्री
हरीसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री

डाक्टर भगवानदास के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)—अध्यक्ष महोदय, आज माननीय सदस्यों ने समाचार-पत्रों में डॉक्टर भगवानदास जी के निधन का समाचार पढ़ा होगा। कल दोपहर से ही इस तरह की खबरें आ रही थीं कि उनकी ऐसी आशंका हो रही थी कि शायद किसी न किसी वक्त उनका शरीर छूट जायगा। वह आशंका दुर्भाग्य से सही निकली और कल रात में ८ बजे के लगभग उनका शरीर छूट गया। उनकी अवस्था इस वक्त ९० वर्ष की थी। ऐसी उम्र में किसी का देहान्त होना असामयिक नहीं कहा जा सकता। लेकिन व्यक्ति व्यक्ति में अन्तर होता है और असामयिक न होते हुये भी डाक्टर भगवानदास जी की मृत्यु एक ऐसी घटना है जिससे देश को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है। साधारण तौर से जब कोई व्यक्ति हमारे बीच में से उठ जाता है तो हमको ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन में कुछ सूना-सूना सा हो गया, एक जगह खाली हो गई। और यह बात सही भी है जो व्यक्ति उठ जाता है उसकी जगह शायद ठीक-ठीक तो कभी भी नहीं भरती। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि डाक्टर भगवानदास जी उन व्यक्तियों में थे जिनकी जगह मेरी समझ में कभी भरी जा सकती ही नहीं, उस जगह का भरा जाना असम्भव है क्योंकि जिस दुनिया में वह जगह बनी थी, जिन परिस्थितियों में वह जगह बनी थी अब वह दुनिया नहीं रही, अब वे परिस्थितियां नहीं रहीं।

राष्ट्रपति ने आज से कुछ दिन पहले उनको भारत-रत्न की उपाधि दी थी। यह हमारे देश की सबसे बड़ी उपाधि है और योग्य व्यक्तियों को ही दी जाती है। परन्तु मुझको ऐसा लगता है कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसके लिये कि यह उपाधि सर्वथा उपयुक्त हो तो वह व्यक्ति डाक्टर भगवानदास जी थे। निश्चय ही उनके निधन से भारत ने अपना एक बहुत बड़ा रत्न खो दिया है। लोगों में इस बात की प्रसिद्धि है कि वह बहुत बड़े विद्वान थे। कुछ लोगों ने उनकी पुस्तिकाओं को पढ़ा भी होगा। कुछ पुस्तकें जैसे "एसेन्शियल यूनिटी आफ आॅल रिलीजन्स" "सब धर्मों का समन्वय" नाम की पुस्तक उनकी बहुत ही लोकप्रिय और पापुलर हैं। जो उनकी सब से बड़ी कृति है—"साइन्स आफ दि इमोशन्स", उस को शायद कम लोगों ने ही देखा होगा, इसलिये कि उसका विषय बहुत कठिन है और विशिष्ट विद्वानों के लिये, ऐसे लोगों के लिये जिनकी दर्शन और मनोविज्ञान शास्त्र में विशेष अभिरुचि है ऐसे लोगों के अध्ययन के लिये ही वह पुस्तक है। वह उनकी मेरी समझ में सबसे बड़ी कृति है और दर्शन और मनोविज्ञान शास्त्र के लिये उनकी सब से बड़ी देन है। परन्तु उनकी विद्वत्ता का अनुमान केवल उनकी पुस्तकों को पढ़कर, उनके लेखों को पढ़कर, उनके

भाषणों को पढ़कर नहीं हो सकता। बड़े विद्वान्, विशेषकर भारतीय शैली के बड़े विद्वान की विद्वत्ता की गम्भीरता केवल उसकी पुस्तकों से ही नहीं प्रतीत होती वरन् उसके सम्पर्क में आने से, उसक साथ काफी समय तक सत्संग करने से ही उसकी विद्वत्ता की गम्भीरता का पता लगता है। डाक्टर भगवानदास अंग्रेजी और पाश्चात्य शास्त्रों के तो पंडित थे ही परन्तु वह भारतीय शास्त्रों के बहुत ही प्रकांड पंडित थे। उन्होंने अपनी यह तमाम विद्वत्ता स्कूल कालेज से नहीं ली, अंग्रेजी पुस्तकों से नहीं ली बल्कि काशी के पंडितों के चरणों में बैठकर उनके साथ रहकर प्राप्त की थी। पंडितों के पास जो विद्या का भंडार है वह पुस्तकों में नहीं मिलता, सैकड़ों नहीं हजारों वर्षों की परम्परायें हैं, ट्रेडीशन्स हैं जिनकी रक्षा पंडितों के द्वारा होती है और वह खजाना अब भी पंडितों के पास सुरक्षित है और उसको वही शख्स प्राप्त कर सकता है जो पंडितों के साथ मिले जुले, उनकी सेवा में रहे। डाक्टर भगवानदास ने इसी प्रकार अपनी उस विद्वत्ता को प्राप्त किया था।

उनका विद्या के क्षेत्र में जो स्थान था उसकी ख्याति सर्वविदित है लेकिन शायद बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी है कि वह कोरे विद्वान ही नहीं थ बल्कि शासन और ऐडमिनिस्ट्रेशन का भी उनको काफी अनुभव था। पहले, बहुत शुरू में अपने जीवन के आरम्भ काल में वह सरकारी नौकर रहे और डिप्टी कलेक्टरी से उन्होंने काम आरम्भ किया था। लेकिन कुछ दिनों के बाद उन्होंने इस काम को छोड़ दिया। शासन की क्षमता जो उन में थी उसका अनुभव उनको उस वक्त हुआ जबकि वह पहले बनारस म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन हुये। यह उस समय की बात है जबकि सन् २३ में कांग्रेस ने निश्चय किया था कि कांग्रेसजन म्युनिसिपल चुनाव लड़ सकते हैं, जिस सिलसिले में कि आपने स्वयं, अध्यक्ष महोदय, झांसी म्युनिसिपल बोर्ड के काम को सम्हाला था। मुझे भी डाक्टर भगवानदास के साथ एक मेम्बर की हैसियत से बनारस म्युनिसिपल बोर्ड में काम करने का अवसर मिला था और मैं जानता हूं कि जिस योग्यता के साथ, जिस दृढ़ता के साथ, जिस खूबसूरती के साथ उन्होंने बनारस म्युनिसिपैलिटी का शासन चलाया उससे जनता में बहुत तुष्टि हुई और उस समय के सरकारी पक्षों में, जो स्वभावतः कांग्रेसजन के शासन में जाने की बात को कड़ी आलोचना की दृष्टि से देखते थे उन लोगों को भी प्रशंसा करनी ही पड़ी।

विद्या के क्षेत्र में, विद्या-दान के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका स्थान बड़ा ऊंचा रहा है। उनका दीर्घकाल से थियोसोफिकल सोसाइटी से सम्बन्ध था। जब मिसेज़ एनी बेसेंट उसकी प्रेसीडेंट हुई थीं उसके भी पहले से उनका सम्बन्ध सोसाइटी से चला आता था और मिसेज़ बेसेंट से और भगवानदास जी और उनके कुटुम्ब से बिलकुल घरेलू आपस का सम्बन्ध था।

जब सेंट्रल हिन्दू कालेज की स्थापना हुई तो उसके जन्मदाताओं में डाक्टर भगवानदास जी थे। स्वाभाविक बात थी। यही हिन्दू कालेज फिर मालवीय जी के प्रयत्न से हिन्दू यूनिवर्सिटी के रूप म परिणत हुआ और हिन्दू यूनिवर्सिटी के जन्मदाताओं में भी डाक्टर भगवान दास जी थे।

जब देश में स्वाधीन विचारों का जोरों के साथ उद्गम हुआ, लोगों के मन में यह विचार उठा, कम से कम उत्तर प्रदेश के लोगों के मन में कि हमको सरकार से अलग होकर, सरकारी व्यवस्था से अलग हो कर स्वतंत्र शिक्षा संस्थाओं की स्थापना करनी चाहिए और काशी विद्यापीठ की स्थापना हुई तो स्वभावतः डाक्टर भगवानदास जी उसके जन्मदाताओं में, उसके संस्थापकों में थे। केवल संस्थापक ही नहीं थे, केवल प्रबन्धक नहीं थे, केवल कुलपति (चांसलर) नहीं थे, बल्कि वह उसमें पढ़ाते भी थे, अध्यापन का काम करते थे। आज भी कई ऐसे लोग हैं जो उनसे पढ़ चुके हैं और जानते हैं कि वह उन अध्यापकों में थे जिनके लिए कि संस्कृत में कहा गया है "छात्रेशु लब्धप्रतिष्ठः" अपने छात्रों में जो अध्यापक की प्रतिष्ठा का लाभ करता है, जिस अध्यापक का स्थान उसके छात्रों के हृदय में स्नेह, गौरव और आदर के साथ रहता है। कई उनके छात्र हैं, उदाहरण के लिये श्री लालबहादुर शास्त्री को ले लें, और कई हैं। कोई आश्चर्य

[डाक्टर सम्पूर्णानन्द]

नहीं होगा, शायद इस सदन में एक आध सज्जन हों, जो उस समय विद्यापीठ में पढ़ते रहे हों जबकि वह उसके न केवल प्रबन्धक थे बल्कि पढ़ाया करते थे। मुझे स्वयं विद्यापीठ में उनके अधीन रह कर एक सहयोगी के नाते अध्यापन करने का मौका मिला है।

राजनीति के क्षेत्र में भी उनका अपना एक विशेष स्थान था। सन् १९२१ ई० में उनको असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में जेल भी जाना पड़ा था। जेल से आने के बाद वह कई वर्षों तक कांग्रेस के कामों में सक्रिय योगदान करते रहे और आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी थे। उनका अपना एक विशेष मार्ग था जिसके लिए उस समय भी देश में और देश के बाहर भी उनकी प्रसिद्धि हुई थी। खासतौर से वह यह बराबर कहा करते थे कि डेफिनीशन आफ स्वराज्य होनी चाहिए। उनका कहना था कि बार-बार हम स्वराज्य की बात करते हैं, लेकिन देश में बहुत से ऐसे लोग हैं जिनकी समझ में यह बात ठीक नहीं आती कि जब स्वराज्य होगा तो व्यवस्था क्या होगी? जो भिन्न-भिन्न वर्ग हैं, भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग रहते हैं, किस के लिये क्या व्यवस्था होगी, इन सब बातों को स्पष्ट किये बिना, उनका कहना था कि लोगों का खिचाव स्वराज्य की ओर नहीं होगा। डेफिनीशन आफ स्वराज्य पर खासतौर से उन्होंने जोर दिया था। महात्मा जी के सामने भी उन्होंने इस पर कई बार जोर दिया और हमको याद है कि गया कांग्रेस में यह तय भी हुआ था कि इस प्रकार के स्वराज्य की रूपरेखा बनायी जाय और यह काम देशबन्धु दास और डाक्टर भगवानदास के सुपुर्द किया जाय। उन लोगों की रिपोर्ट दास रिपोर्ट के नाम से प्रकाशित हुई। लेकिन सब से पहले इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय डाक्टर भगवानदास को ही है।

वे कुछ दिनों के लिये केन्द्रीय विधान सभा के भी सदस्य थे। मैं उन सब बातों की कहां तक चर्चा करूं, जीवन के उन सब पहलुओं का कहां तक जिक्र करूं जिनमें उन्होंने भाग लिया और जिन पर वे अपनी अमिट छाप छोड़ गये। जिन लोगों को उनसे मिलने का मौका मिला होगा उनमें से हर व्यक्ति का यह अनुभव होगा, जिसे अंग्रेजी में कहते हैं कि "He is every inch a gentleman" और इससे ज्यादा प्रशंसा मैं क्या करूं?

एक और प्रशंसा की चीज है। जिन लोगों ने कभी उनको देखा होगा उनका ध्यान शायद एक चीज की तरफ गया होगा। एक बार पंडित जवाहर लाल नेहरू ने डाक्टर भगवान दास के लिये कहा था कि "Dr. Bhagwan Das has the straightest back I have ever seen." बीमारी की हालत में भी जब कभी-किसी ने उन्हें बैठे देखा होगा तो झुक कर बठे नहीं देखा होगा। हम में से बहुत से लोगों को ५ मिनट भी एक आसन से बैठना कठिन हो जाता है, कभी दाहिने झुक जाते हैं, कभी बायें झुक जाते हैं, कभी आगे झुक जाते हैं, कभी पीछे झुक जाते हैं। लेकिन उनकी यह खास बात थी कि वे कभी पीठ झुका कर नहीं बैठते थे। यह बहुत बड़ी बात है और शरीर के उस संयम का प्रमाण है जो उन्होंने अपनी जवानी की उम्र में अपने शरीर पर कायम रखा।

जैसा कि मैंने और भी एक आध बार सदन में जिक्र किया है, हमारे देश की और विशेष रूप से हमारे प्रदेश की अपनी एक खास सभ्यता थी, संस्कृति थी। हिन्दू और मुसलमान, दोनों धाराओं ने मिल कर उसको पुष्ट किया था। हो सकता है कि किसी को उसमें ऐब देख पड़ता हो, कृत्रिमता देख पड़ती हो, दोष देख पड़ता हो, लेकिन वह एक बहुत बड़ी चीज थी। अब वह जमाना मिट रहा है, वह चीज हमारे बीच से उठ रही है। एक एक कर के वे लोग हमको छोड़ कर चले जा रहे हैं, जिनको उस तहजीब, उस संस्कृति का प्रतीक, उसका सिम्बल कह सकते हैं। इस दृष्टि से जब हम देखते हैं तो डाक्टर भगवानदास जी केवल एक व्यक्ति विशेष नहीं हैं बल्कि ऐसा लगता है कि हमारे देश की संस्कृति के इतिहास के एक अध्याय का शायद अन्तिम पृष्ठ लिखा जा रहा है। उत्तर प्रदेश की वह एक विशेष संस्कृति थी और फिर काशी के पंडित समाज ने उस संस्कृति को जो एक विशेष प्रकार का रंग दिया था वह रंग अब शायद देखने

को नहीं मिलने वाला है, वह चीज हमारे यहां से अब शायद उठ गयी, वह दीपक अब शायद बुझ जाने वाला है। इसलिये मैं कहता हूं कि डाक्टर भगवानदास जी ने जो स्थान छोड़ा है वह रिक्त रहेगा, अब भरने वाला नहीं है।

हम में से बहुत से लोगों के लिये उनका निधन एक बहुत बड़ा वैयक्तिक आघात है। वर्षों से अनेक हैसियतों में उनके साथ काम करने का, उनसे मिलते-जुलते रहने का, उनके सत्संग का, उनकी विद्या से, उनके सौजन्य से लाभ उठाने का, उनसे स्फूर्ति प्राप्त करने का अवसर मिलता रहा है, एक बुजुर्ग था जो उठ गया। इससे जो क्षति हुई है उसको मैं शब्दों में नहीं कह सकता। काशी का बहुत बड़ा नुकसान हुआ, उत्तर प्रदेश का बहुत बड़ा नुकसान हुआ, देश का बहुत बड़ा नुकसान हुआ और इस विद्वत् जगत का बहुत बड़ा नुकसान हुआ। मैं इसके सिवाय और क्या कहूं कि आज उस दुःख को जिसको हम सब अनुभव कर रहे हैं, उनके परिवार तक पहुंचा दें, हमारी समवेदना की सूचना उनको दें और इसके साथ ही मेरा यह भी नम्र निवेदन है कि आज इसके बाद सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी जाय।

श्री जगन्नाथ लहरी (जिला आगरा)---अध्यक्ष महोदय, भारत-रत्न डाक्टर भगवान-दास के निधन के शोक समाचार को पढ़कर इस प्रदेश के ही नहीं, बल्कि भारत के सभी नागरिकों को दुःख है। डाक्टर भगवानदास विद्वत्ता के ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और दार्शनिक क्षेत्र में एक अमूल्य रत्न थे। उनकी योग्यता का इससे बड़ा और कोई सूचक प्रमाण नहीं मिल सकता है कि भारत के राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने भी उन्हें १९५५ में भारत-रत्न की उपाधि से विभूषित किया था।

अध्यक्ष महोदय, यद्यपि डाक्टर भगवानदास पार्थिव शरीर से समाप्त हो गये, लेकिन उनका नाम, जब तक भारत का इतिहास रहेगा, सदा अमर रहेगा। यद्यपि आज डाक्टर भगवानदास सशरीर इस संसार में विद्यमान नहीं हैं, लेकिन उनकी अमर कृतियां, जिन्हें उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व या इस संसार से कूच करने से पूर्व लिखी हैं वह सदैव मानव जाति का पथ-प्रदर्शन करती रहेंगी। डाक्टर भगवानदास भारत के गौरव थे। भारत के इस रत्न के, भारत के इस गौरव के इस प्रदेश में जन्म लेने के कारण, इस प्रदेश के नागरिक होने के कारण, उत्तर प्रदेश अपना सिर ऊंचा करके यह कह सकता है कि उसे यह सौभाग्य प्राप्त है कि उसने डाक्टर भगवानदास जैसे भारत-रत्न को जन्म दिया। डाक्टर भगवान दास की दार्शनिकता के आगे देश के ही नहीं, बल्कि विदेशों के विद्वान् भी सिर झुकाते थे और समय-समय पर उनके दर्शन के लिये आते रहते थे।

आज यकायक उनके निधन के समाचार के साथ-साथ समाचार-पत्रों में जो उनका चित्र प्रकाशित हुआ है---यद्यपि उस जमाने में भारत-रत्न की उपाधि नहीं दी जा सकती थी---वह स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ टैगोर के चित्र से मिलता जुलता है जिस प्रकार से वह विद्वत्ता, राजनीति और दार्शनिकता के क्षेत्र में भारत का नाम अमर कर गये थे, उनके चित्र से मिलता जुलता डाक्टर भगवानदास का चित्र है और उनको भी वही गौरव और सम्मान प्राप्त है जो रवीन्द्रनाथ टैगोर को प्राप्त था।

आज इस अवसर पर हम सब लोगों का दुःख से संतप्त हो जाना स्वाभाविक है। अध्यक्ष महोदय, एक ऐसे युग में जब भारत अंग्रेजों की दासता में जकड़ा हुआ था, भारत-रत्न डाक्टर भगवानदास ने भारतीय नागरिकों को शिक्षा के क्षेत्र में जिस समय कि शिक्षा पर विदेशी शासन के द्वारा ईसाई मिशनरियों का ही अधिकार था, बनारस में हिन्दू सेंट्रल कालेज की स्थापना करके उन्होंने भारतीयों के लिये जो मार्ग प्रदर्शन किया, उसी के परिणामस्वरूप हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई जो आज भारत में ही नहीं, एशिया भर में सबसे बड़ा विश्व-विद्यालय है। एशिया के सबसे बड़े विश्वविद्यालय के संस्थापकों में डाक्टर भगवानदास का नाम है। उसकी नींव में डाक्टर भगवानदास हैं। जब राष्ट्रपिता बापू के आह्वान पर विदेशी प्रणाली के कालेजों का बायकाट किया गया उस समय एक बार पुनः भारत-रत्न भगवान-

[श्री जगन्नाथ लहरी]

दास ने भारत का पथ-प्रदर्शन करने के लिये काशी विद्यापीठ की स्थापना की और काशी विद्यापीठ को आज इस बात का सौभाग्य प्राप्त है कि उसने भारत के अनेक ऐसे राजनीतिक नेताओं को शिक्षा दी जो कि आज भारत के शासन को संभाले हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, यद्यपि डाक्टर भगवानदास इस संसार में अब नहीं हैं, लेकिन जब कि वह इस संसार में जीवित थे उस समय भी उनकी विद्वत्ता का सम्मान करने के लिये काशी विश्वविद्यालय और इलाहाबाद विश्वविद्यालय को यह सौभाग्य प्राप्त है कि उन्होंने भारत और प्रदेश के इस गौरव को अपने-अपने विश्वविद्यालयों की डाक्टरी उपाधि से विभूषित कर अपना भी नाम अमर कर लिया। अध्यक्ष महोदय, आज वह भारत का गौरव यकायक उठ गया। उनके उठने से हमारे प्रदेश को जो क्षति हुई है उसका सहज में ही अनुमान नहीं लगाया जा सकता जब कि नेता सदन ने कहा है कि उनकी मृत्यु को हम असामयिक नहीं कह सकते, क्योंकि उनकी मृत्यु के समय ९० वर्ष की अवस्था थी। आज ९० वर्ष के बाद भी उनका ज्ञान इतना परिपक्व था, वह दार्शनिकता क क्षेत्र में दिन प्रतिदिन उन्नति करते चले जा रहे थ और विश्व का पथ-प्रदर्शन करते रहे। डाक्टर भगवानदास अब हमारे बीच में नहीं हैं। डाक्टर भगवानदास क लिये यद्यपि हम लोग शोक मना रहे हैं, लेकिन मैं यह कहता हूं कि अब डाक्टर भगवानदास अमर हो गये हैं। जब तक भारत का इतिहास रहेगा तब तक डाक्टर भगवानदास का भी नाम अमर रहेगा। डाक्टर भगवानदास उन व्यक्तियों में नहीं हैं, जिनके मरने के बाद शोक मनाएं और कुछ दिनों के बाद उनको भूल जांय। आज देश ही नहीं विदेशों म भी डाक्टर भगवानदास के प्रति शोक और समवेदना प्रगट को जा रही है। इस अवसर पर नेता सदन ने जो उद्‌गार प्रगट किये हैं वह उनके लिय श्रद्धांजलि के पुष्प हैं। मैं भी उन शब्दों क साथ अपने प्रदेश के इस गौरव भारत-रत्न डाक्टर भगवानदास को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवदन करता हूं कि आप उनक संतप्त परिवार तक हम लोगों की समवेदना पहुंचान की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष—भारत-रत्न डाक्टर भगवानदास की बीमारी की खबर मुझे कल यह मिली थी कि इस वक्त उनकी दशा कठिन हो गयी है। शायद कल ही हमको यह दुःखद वार्ता जब सदन चल रहा था उसी वक्त मिलती। उस वक्त मैं भी विचार यह कर रहा था कि भगवान ऐसा न करे और भगवान् उन्हें अब भी कुछ समय और दे जिसमें वे शतायु हो कर ही हमारे बीच में से जावें, लेकिन वह हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई, यद्यपि यह बात सत्य है कि उनकी मृत्यु असामयिक नहीं है क्योंकि ९० वर्ष की आयु काफी बड़ी होती है। जो भावनायें, समवेदना तथा दुख इस आदरणीय सदन में नेता सदन ने और श्री जगन्नाथ लहरी जी ने व्यक्त किये हैं इस सदन की ओर से उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुए मैं दो एक बातें अवश्य कहना चाहता हूं।

उनका तथा मेरा सम्बन्ध गुरु और शिष्य का रहा है। मैं सन् १९१२ में हिन्दू कालेज में इंटरमीडियेट कक्षा के प्रथम वर्ष में दाखिल हुआ था और उस समय डाक्टर भगवानदास वहां पर हमें धर्म की शिक्षा दिया करते थे। यदि धर्म के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान मुझे हुआ, इस दृष्टि स नहीं कि हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में, बल्कि सनातन धर्म के सम्बन्ध में, मानव धर्म के सम्बन्ध में और नैतिकता के सम्बन्ध में अगर कुछ शिक्षा मुझे अपने जीवन में प्राप्त हुई है तो वह डाक्टर भगवानदास की कृपा स ही प्राप्त हुई है। चार वर्ष तक हम उनस यह शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं। तो आप समझ सकत हैं कि जिसने मेरे जीवन को, मेरे चरित्र को बनाया हो उसक आज चले जाने पर मेरे हृदय में क्या भावनाय हो सकती हैं। मेरा हृदय भरा हुआ है। उनका चित्र मेरे सामने है। मैं अधिक कुछ नहीं कह सकता। यह सदन की समवेदना मैं उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दूंगा।

मैंने देखा है अपनी आंखों से कि विदेश के दार्शनिक उनके चरणों में बैठकर किस प्रकार से भारतीय दर्शन को तुलनात्मक दृष्टि से पाश्चात्य दर्शनों के साथ अध्ययन किया करते थे, उस वक्त उनकी ख्याति तुलनात्मक दार्शनिक की संसार में हो गयी थी। उनक पश्चात्, मैं कह सकता हूं कि हमारे देश में सर्वपल्ली राधाकृष्णन् उनके ही जैसे महान् दार्शनिक आधुनिक युग में पैदा हुए। डाक्टर भगवानदास ने दर्शन शास्त्र वेत्ता की ख्याति दूसरे देशों के लोगों में भी अर्जित की, केवल उपदेशात्मक दृष्टि से नहीं, व्याख्यान के द्वारा नहीं, बल्कि बड़े-बड़े अध्ययन-शील दार्शनिक यहां आकर उनसे ज्ञान प्राप्त करते थे। ऐसे महान् विद्वान व दार्शनिक का हमारे देश से चले जाने से जैसे नेता सदन ने कहा, कि उनके चले जाने से जो क्षति हमारे देश की हुई है कभी भी पूरी नहीं हो सकती। इसलिये मैं भी आप की भावनाओं के साथ अपने को सम्बद्ध करते हुये अपने दुख को, इस सदन के दुख को, और आप सब की भावनाओं और समवेदना को उनके संतप्त कुटुम्बियों के पास भेज दूंगा। अब हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिये दो मिनट के लिये खड़े हो कर, परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

(सब सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए।)

श्री अध्यक्ष—अब हम उठते हैं और सोमवार को ११ बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन ११ बजकर ३६ मिनट पर सोमवार, २२ सितम्बर, १९५८ के ११ बजे दिन तक के लिये स्थगित हो गया।)

लखनऊ :
१९ सितम्बर १९५८।

देवकी नन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी० एस० ए० पी० ए० पी०—१८५ एल० ए०—१९५८—८४०।